लेट्स टॉक फिल्टर्स

साभार:
इंडियन एक्सप्रेस

25 नवंबर, 2017

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र-III (विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी) से संबंधित है।

सोशल मीडिया दिग्गजों को मजबूत स्व-विनियमन की आवश्यकता होती है, ताकि सरकार के पास इंटरनेट पर हस्तक्षेप करने के लिए कोई बहाना ना हो।

फेसबुक ने घोषणा की है कि वह एक ऐसे उपकरण का निर्माण कर रहा है जो उनके उपयोगकर्ताओं को यह देखने की अनुमति देगा कि वे रूस के प्रचार-प्रसार का कितना पालन करे, विशेष रूप से 2015-2016 अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव अभियान के दौरान। सोशल मीडिया ''हमारे लोकतंत्र को कमजोर करने की कोशिश करने वाले बुरे कर्ताओं से हमारी रक्षा करने का प्रयास करते हैं।'' इसमें गूगल और ट्विटर भी शामिल है, जहाँ अमेरिकी विधायक यह महसूस करते हैं कि विदेशीकर्ता इन प्लेटफार्मों का इस्तेमाल 'नकली समाचार' को फैलाने के लिए करते हैं। वास्तव में चुनाव के बाद से सोशल मीडिया स्पेस को कब और कैसे विनियमित किया जाए, इसके बारे में बहस काफी बढ़ रही हैं। हांलाकि, यह सामान्य उत्तर लगता है कि एल्गोरिदम के साथ छेड़छाड़ और यह कहना कि इंटरनेट पर प्रतिशब्द केवल समाज का दर्पण है, पर्याप्त नहीं होगा।

प्रिंट या टेलीविजन मीडिया के विपरीत, इंटरनेट के विकास ने इसे विनियमित करने के प्रयासों को दूर किया है। स्वतंत्रता और आवाज, जिसका लाभ सोशल मीडिया प्लेटफार्म उपयोगकर्ताओं को प्रदान करते हैं, उन पर प्रतिबंध लग जाएगा, अगर सरकारें पूरी तरह से इस पर शासन करना शुरू कर देती है तो। उदाहरण के लिए, आईटी अधिनियम की धारा 66ए असंतोष को शांत करने के लिए भारत में कई सरकारों द्वारा इस्तेमाल किया गया था। दूसरी ओर, अज्ञात रूप से भुगतान किए जाने वाले विज्ञापन का प्रचार-प्रसार फैलाने और चुनाव तय करने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। समाधान, शायद पारंपरिक प्रकाशन संगठनों के चरणों में निम्नलिखित में निहित है।

फेसबुक, गूगल और ट्विटर अधिकांश प्लेटफार्मों और प्रकाशकों की तरह ही लाभकारी उद्योग है। यह देखते हुए कि उपयोगकर्ता का डेटा उत्पाद है, कुछ लोग और नीति निर्माता भी इस बात को मानते हुए नाखुश है कि सामग्री की गोपनीयता और यथार्थ जैसी चीजें सोशल मीडिया कंपनियों के लिए प्राथमिक चिंता का विषय नहीं हैं। उन आशंकाओं को विराम देने के लिए यह महत्वपूर्ण है कि कंपनियां स्वयं इस अंतर को पाटे। उदाहरण के लिए फेसबुक, अब दुनिया का सबसे बड़े प्लेटफार्मों में से एक है। इसलिए निश्चित रूप से इसके पास संपादक या आर्टिफीसियल इंटेलीजेंस (AI) होना चाहिए, ताकि किसी भी सरकार को इंटरनेट में हस्तक्षेप करने का बहाना न मिले।

संबंधित तथ्य

सोशल मीडिया के सकारात्मक प्रभाव

- यह संचार का एक बहुत अच्छा माध्यम है, जिसमें द्रुत गति से सूचनाओं का आदान-प्रदान होता है और इनमें हर प्रकार की जानकारी शामिल होती है।
- सोशल मीडिया के माध्यम से सभी को अपनी बात कहने का एक ऐसा मंच उपलब्ध हो गया है, जहाँ बेरोकटोक अपनी बात/विचार रखे जा सकते हैं।
- सोशल मीडिया ने लोगों को एक ही समय पर अलग-अलग होने के बावजूद एक साथ जोड़ा है और लोगों के हित, लगाव और व्यवहार के नए पहलुओं को जन्म दिया है।
- विशेषज्ञों ने इसे इनफार्मेशन हाईवे का नाम दिया है, जिस पर कोई भी चल सकता है और यह सबके काम का है। लेकिन जिस प्रकार हाईवे (सड़क) दुर्घटनाओं से अछूता नहीं रह पाता, ठीक उसी प्रकार यहाँ भी दुर्घटनाएँ होती रहती हैं, बल्कि कुछ ज्यादा ही होती हैं।

- सोशल मीडिया अपनी सकारात्मक भूमिका के माध्यम से किसी भी व्यक्ति, संस्था, समूह और देश आदि को आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक रूप से समृद्ध बना सकता है।
- 2014 के आम चुनावों के दौरान सोशल मीडिया के माध्यम से मतदाताओं को जागरूक बनाने का काम किया गया, जिससे इन चुनावों में मतदान का प्रतिशत तो बढ़ा ही, साथ-ही-साथ युवाओं में चुनाव के प्रति जागरूकता भी बढ़ी।
- यह सोशल मीडिया ही था जिसके माध्यम से ही 'निर्भया' को न्याय दिलाने के लिये विशाल संख्या में लोग सड़कों पर आ गए थे, जिससे सरकार को दबाव में आकर एक नया एवं अधिक प्रभावशाली कानून लाना पड़ा।
- आज फिल्मों के ट्रेलर, टीवी प्रोग्राम का प्रसारण भी सोशल मीडिया के माध्यम से किया जाने लगा है। वीडियो तथा ऑडियो चोट भी सोशल मीडिया के माध्यम से सुगम हो पाई है।

सोशल मीडिया के नकारात्मक प्रभाव

- इस मीडिया के विभिन्न प्लेटफॉर्म्स पर ऐसी खबरों और सूचनाओं की भरमार है, जिनका सच्चाई से दूर-दूर तक कोई वास्ता नहीं होता। अफवाहें फैलाना, दिग्भ्रमित करने वाली खबरें दिखाना, आदि आज सोशल मीडिया की पहचान बन गई है।
- कुछ विशेषज्ञों का यह मानना है कि जिसे हम झूठ, अफवाह या गलती से हो गया कृत्य मानते हैं, वह जानबूझकर किया गया होता है और इसने सोशल मीडिया पर एक सांगठनिक रूप ले लिया है। जहाँ से इसका व्यापक प्रचार-प्रसार हो रहा है, वह हमारी पहुँच से बाहर है।
- जैसा माहौल आज बन गया है उससे तो यह लगता है कि सोशल मीडिया पर आप कुछ भी कर लीजिये, आपका कोई कुछ नहीं कर सकता। अपनी किसी गलती के लिये माफी मांगने की जरूरत भी नहीं समझी जाती, जो कि मुख्य धारा के मीडिया की पहचान मानी जाती है।
- विशेषज्ञ इसे सिटिजन जर्नलिज्म का दौर बताते हैं, जहाँ पत्रकारिता की जानकारी नहीं भी होने पर लोग ऐसा मानते हैं कि उनके पास जो सूचना है (गलत या सही जैसी भी) वह सबसे पहले लोगों तक उनके माध्यम से पहुँचनी चाहिये।
- सोशल मीडिया विशेषकर युवा पीढ़ी के बीच सामाजिक व्यवहार और नैतिकता की परिभाषा को बदल रहा है।
- कई बार व्यक्तिगत द्वेष के कारण सोशल मीडिया पर ऐसे कार्यों को अंजाम दिया जाता है, जिससे पीड़ित की प्रतिष्ठा को तुरंत नुकसान पहुँचता है और कुछ मामलों में आत्महत्या जैसे बेहद घातक परिणाम सामने आते हैं।
- इसके अलावा हाल ही में सोशल मीडिया के माध्यम से विश्वभर में प्रसारित हुआ ब्लू व्हेल जैसा घातक खेल सामने आया है, जिसके चंगुल में फँसकर सैकड़ों किशोर/युवा आत्महत्या करने को प्रेरित हुए और अपने प्राण गँवा बैठे।

संभावित प्रश्न

आज के गतिशील दौर में लोगों को एक-दूसरे के करीब लाने में सोशल मीडिया बहुत बड़ी भूमिका निभा रहा है, परंतु विश्वभर की सरकारों द्वारा प्रचार-प्रसार के लिए इसका उपयोग और उनके बढ़ते हस्तक्षेप ने इसकी महत्वता को कम किया है। इस कथन का विश्लेषण कीजिये। **(200 शब्द)**

Social media is playing a big role in bringing people closer to each other in today's dynamic phase, but its use and their growing intervention by the governments around the world has reduced its importance. Analyze this statement. **(200 words)**